→ स्त्री और पुरुष मे यही तो अंतर है, नारी भले कामवश माता क्यो न बने, किन्तु माता बनकर वह निष्काम हो जाती है। और पुरुष पिता बनकर भी दायित्व बोध भली प्रकार से अनुभव नही कर पाता है

→ रत्नावली का व्यंग्य

* विशेष : तुलसी का आविर्भाव ऐसे समय मे हुआ, जब भारत प्राचीन सांस्कृति से समन्वित मुगलो के पैरो तले दबा हुआ था।

o→ रामचरित 'मानस' की रचना करते समय तुलसी को अयोध्या और काशी के पण्डितो के ईर्ष्या-द्वेष तथा उनके षड्यंत्रो का सामना करना पड़ा।

o→ काशी मे जब महामारी फैली तो तुलसी ने अपने शिष्यो के साथ मिलकर जनसेवा की।

By- S.R. SHARMA
9999233771

o→ नागर जी ने इस उपन्यास मे देशकाल और वातावरण का यथार्थ चित्रण करने के लिए अनेक विद्वानो के वेतो का श्रृंखलाबद्ध करने का प्रयास किया है।

o→ उन्होने तत्कालीन अयोध्या, काशी के बिगड़ते संस्कार, दूषित वातावरण तथा धर्मान्धता का आकर्षक रूप प्रस्तुत किया है।

o→ 'मानस का हंस' अपने परिवेश मे तत्कालीन युग का महाख्यान है। जिसमे भारतीयता की असली खोज की जा सकती है।

o→ उपन्यास मे वर्णित मुगलो और पठानो के दौर की बर्बरता, भारतीय जनमानस की जर्जर और अस्थिर अवस्था तथा उनकी गहरी पीड़ा पाठको को झकझोर देती है।

o→ 'मानस का हंस' उपन्यास मे नागर जी का उद्देश्य अनास्था और अविश्वास के दौर मे भारतीय आस्था और विश्वास के स्वर बिखेरना है।

* महत्वपूर्ण कथन :

→ "मैं प्रीति तो बढाना चाहता हूँ पर प्रतीति क्यों नहीं होती।" - तुलसीदास (भगवान श्रीराम के लिए)

→ "उपन्यास में तुलसी के जन्म से लेकर मृत्यु तक का जो जीवन-चरित प्रस्तुत हुआ है वह इतना सजीव तर्कसंगत और सम्बद्ध है कि कदाचित ऐतिहासिक तथ्य न होते हुए भी वह प्रतीत: यथार्थ बन गया है" गोपाल राय

→ "हिन्दी कथा साहित्य में भले ही प्रेमचंद कथा-सम्राट माने जाते हैं, लेकिन उनके गोदान की टक्कर का कोई कालयजी उपन्यास अगर कभी ढूँढा जायेगा तो समीक्षक निश्चय ही मानस का हंस स्वीकार करेंगे।" - डॉ. योगेन्द्र

→ "टूटी झोपड़ियों के बीच में अकेले महल की कोई शोभा नहीं होती है। वह अपनी सारी भव्यता, कलात्मकता में क्रूर और गँवार लगता है।" - मानस का हंस (पृ० - 374)

→ नागर जी की यह टिप्पणी समाजवादी व्यवस्था के प्रति उनके दृढ आग्रह को दिखाती है।

→ तुलसी की टिप्पणी "ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी" पर रत्नावली सवाल भी उठाती है। वरदरहल स्त्रियों के प्रति तुलसी के मन में तब तक कोई दुर्भावना नहीं है जब तक वह सीता को एक चरित्रवान है।

www.youtube.com/c/SAFALTAKESIDE

* उपन्यास के पात्र :

(i). तुलसीदास : केन्द्रीय या मुख्य पात्र, जिनपर जीवनीपरक उपन्यास का निर्माण किया है।

(ii). रतना : तुलसीदास की पत्नी है, रूप सौन्दर्य की धनी है।

(iii). पं. दीनबन्धु : रत्नावली के पिता

(iv). मैना कहरिन, जतासो, श्यामो की बुआ, नन्हकू, मनकू

(v). बकरीदी चाचा : दर्जी बाबा तुलसीजी से आयु में 4 दिन बड़े

(vi). पं. गणपति उपाध्याय : बाबा के पुराने शिष्य (68-69 वर्ष)

(vii). हुलसिया :- पंडाइन की मुँह बोली ननद

(viii). संतवेनी माधव : सूकरखेत निवासी शिष्य (उम्र-50-55 वर्ष)

(ix). रामू द्विवेदी : काशी से आए बाबा (तुलसी के शिष्य)

* ट्रिक : अमृत पीकर मानस ने तुलसी रत्न पाए।

पं. गणपति दीनबंधु ने देखा की मैना कहरिन की बकरी रजिया बाबा की झोपड़ी में घुस गई है। संत वेनीमाधव के शिष्य दीन गंगाराम ने बकरी का सिर दबाकर (पकड़कर) रमजानी को दिया

- इस उपन्यास में तुलसीदास का अंतर्द्वंद, तत्कालीन समाज की मनः स्थिति व रचनावली की त्यागमयी प्रतिमूर्ति के दर्शन होते है।
- गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1511 ई० को हुआ था। लेकिन दुर्भाग्यवश उनके जीवन के बारे में कोई ऐतिहासिक जानकारी नही मिलती है।
- इसलिए अमृत जी को जनश्रुतियों और लोकगाथाओं का सहारा लेना पड़ा।
- यह एक जीवनीपरक उपन्यास है।
- नागर जी ने इस उपन्यास को लिखने के लिए तुलसीदास जी की निम्न रचनाओं का सहारा लेना पड़ा।
- कवितावली और विनय पत्रिका : अन्तः संघर्ष और मनोव्यक्तित्व
- रामचरितमानस : मनोद्वंद्व
- हनुमानबाहुक, दोहावली, गीतावली : जीवन झाँकी
- 4 जून 1971 ई० को तुलसी स्मारक भवन अयोध्या में इस उपन्यास "मानस का हंस" का लेखन प्रारम्भ किया।
- 23 मार्च 1972 ई० रामनवमी के दिन लखनऊ में इसे पूरा किया।

www.youtube.com/c/Safaltakisidi

tme/Safaltakisidi

मानस का हंस (महत्वपूर्ण बिंदु)

- प्रकाशन - 1972 / 1973 (विकिपीडिया) (दैनिक ट्रिब्यून)
- यह उपन्यास रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर लिखा गया है।
- यह लखनवी अंदाज मे लिखा गया उपन्यास है।
- इस उपन्यास मे नागर जी ने धार्मिक, साम्प्रदायिक जातिवाद का वर्णन जरूर किया है, लेकिन इससे ऊपर उठकर इसमे हम "मानवतावादी" दृष्टि देख सकते है।
- इस उपन्यास मे तुलसीदास का जो स्वरूप चित्रित किया गया है, वह एक सहज मानव का रूप है। तथा यही कारण है, कि "मानस का हंस" हिन्दी उपन्यासो मे "क्लासिक" का सम्मान पा चुका है।
- यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है।
- "हंस" का शाब्दिक अर्थ : आत्मा, अलौकिक गुणो से सम्पन्न मनुष्य, एक प्रकार के सन्यासी, शुद्ध आत्मा आदि।
- "मानस" का शाब्दिक अर्थ : मनोभाव, मन मे उत्पन्न संकल्प, मन से मन के द्वारा या रामचरितमानस।

* संपादन :

1934 : सुनीति

1935-36 : सिनेमा समाचार

1937-38 : अल्ला कहदे।

1938 : चकल्लस (साप्ताहिक) Feb. 38 - 30 Oct. 1938)

~~1939~~ :

1945 : ~~सनीचर~~ नया साहित्य

1949 : सनीचर

1953÷54 : प्रसाद

* उपन्यास :

1. महाकाल (1947)
2. बूँद और समुद्र (1956)
3. शतरंज के मोहरे (1959)
4. सुहाग के नुपुर (1960)
5. अमृत और विष (1966)
6. सात घूघट वाला मुखडा (1968)
7. भूख (महाकाल पुनः) (1970)
8. एकदा नैमिषारण्ये (1972)
9. मानस का हंस (1973)
10. नाच्यो बहुत गोपाल (1978)
11. खंजन नयन (1981)
12. बिखरे तिनके (1982)
13. अग्निगर्भा (1983)
14. कसक (1985)
15. पीढियाँ (1990)

By- S. R. SHARMA

www.youtube.com/c/safaltakisidi

t.me/safaltakisidi

o→ हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा "साहित्य वाचस्पति" उपाधि से विभूषित किया गया।

o→ नागर जी का हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला, अंग्रेजी भाषा पर अधिकार था।

o→ नागर जी ने फिल्म लेखन का भी काम किया।

o→ आकाशवाणी, लखनऊ में ड्रामा प्रोड्यूसर भी रहे।

o→ 'चकल्लस' पत्र का सम्पादन भी किया। (फरवरी '38 से अगस्त '38)

o→ नागर जी शुरुआत में "भैचराज इंड" के नाम से कविताएँ लिखते थे।

o→ "तस्लीम लखनवी" नाम से व्यंग्यपूर्ण स्केच व निबंध लिखे।

o→ कहानी लेखन में अपना मूल नाम अमृतलाल नागर रखा।

✳ भाषा-शैली : भाषा सहज, सरल, दृश्य के अनुकूल है। मुहावरे, लोकोक्तियों, विदेशी तथा देशज शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है।

o→ भावात्मक, वर्णनात्मक, शब्द चित्रात्मक शैली का प्रयोग।

✳ साहित्यिक रचनाएँ : उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक, व्यंग्य काव्य रचनाएँ, बाल साहित्य, अनुवाद, संपादन संस्मरण, आदि

⇒ अमृतलाल नागर के उपन्यासों को रामविलास शर्मा ने "हिंदी के गैर मानक स्त्री का पिंजरा" कहा।

मानस का हंस : अमृतलाल नागर

By - S.R.SHARMA

जन्म : 17 अगस्त 1916

मृत्यु : 23 फरवरी 1990

जन्मस्थान : गोकुलपुरा (आगरा) उ०प्र० (गुजराती ब्राह्मण परिवार)

→ शिक्षा : हाईस्कूल तक (स्वाध्याय से साहित्य का सृजन)

* पुरस्कार :

1967 : अमृत और विष पर साहित्य अकादमी पुरस्कार

1973-74 : मानस का हंस पर उत्तर प्रदेश राज्य साहित्य परिषद सम्मान

1981 : पद्म विभूषण सम्मान

1989 : वर्ष 1985 का उ०प्र० हिंदी संस्थान का सर्वोच्च भारत भारती सम्मान (22 दिसंबर 1989) को मिला।

1984 : खंजन नयन पर भारतीय भाषा कलकत्ता का नथमल भुवालका पुरस्कार

1970-71 : हिंदी रंगमंच की विशिष्ट सेवा हेतु उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

1972 : मानस का हंस पर म०प्र० साहित्य परिषद का अखिल ~~साहित्य~~ भारतीय वीरसिंह देव पुरस्कार

1970 : अमृत और विष पर सोवियत लैंड पुरस्कार (नेहरू)

1962-63 : सुहाग के नुपुर पर उ०प्र० शासन का प्रेमचंद पुरस्कार

वि०सं० 2015-18 : बूंद और समुद्र पर बटुक प्रसाद पुरस्कार सुधारक पदक
काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा

सफलता की सीढ़ी
9999233721